अध्याय प्रथम

"छत्तीसगढ़ का सामान्य परिचय"

''छत्तीसगढ़ का सामान्य परिचय''

१. छत्तीसगढ़ का भौगोलिक एवं राजनीतिक परिचय।

२. छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों के विभिन्न वर्ग।

३. छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों का आगमन एवं उनकी गतिविधियाँ।

४. काँग्रेस का जन्म एवं राष्ट्रीय चेतना का छत्तीसगढ़ में उदय।

बिलासपुर जेल में माखन लाल चतुर्वेदी द्वारा रचित कविता –

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृ भूमि सीस चढ़ाने,
जिस पथ जाये वीर अनेक।"

छत्तीसगढ़ का भौगोलिक एवं राजनीतिक परिचय :-

सामान्य परिचय :-

छतीसगढ़ का स्मरण करते ही मानस पटल पर अनेक चित्र उभरते है और अपना आभाष देकर विलुप्त हो जाते है, नंद, मौर्य, शंगु, वाकारक पाण्डु, शरभपुरीय शोम, कलचुरी नाग, गोड़, मराठा आदि कितनें ही वंशों का इतिहास समेत अतीत काल से हिन्दूस्तान के हृदय स्थल मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्वी भू भाग पर स्थित छत्तीसगढ़ ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों को अपने शिवनाथ की घाटीयों में प्रसन्न हो किलकारियां मारता हुआ, क्रिड़ा करता हुआ, इन्द्रावती, हसदो, अरपा आदि नदियों द्वारा सिंचित अपनी "आनंदयामिनी शक्ति" के कारण "धान का कटोरा" नाम से मंडित वैभव संम्पन्न सुख शान्ति वीरता से युक्त छत्तीसगढ़ीयों के क्षेत्र इस छत्तीसगढ़ ने सदियों से गरिमामय इतिहास की पंरपरा को हृदय रूप करते हुये समयानुकुल देश के परिवर्तन कारी घटनाक्रमों के परिणामों को आत्मसात करते हुये अपने विकास की पंरपरा को सदा ऊंचाई की ओर बढ़ाया है। मानों विगत वैभव की विजय कीर्ति पताका विश्व में फहराने के लिये वह बादल सा ऊंचाईयों की ओर उड़ रहा है। [1]

वर्तमान का यह छत्तीसगढ़ प्राचीन समय में दण्डकारण्य का एक भाग था किन्तु आज वहीं दण्डकारण्य इसके अन्तर्गत आता है। अतीत काल में यह छत्तीसगढ़ "दक्षिण कौशल, महाकौशल, महाकान्तार, दण्डकारण्य आदि सूविख्यात नामों से जाना जाता था और हर युग में इसका अपना विशेष महत्व रहा है।[2]

---

1. संदर्भ छत्तीसगढ़ पेज संख्या – 20
2. आबिद छत्तीसगढ़ पेज संख्या 20

भौगोलिक परिचय :-

नर्मदा के उद्गम स्थल अमरकंटक को प्रस्थान बिन्दु मानकर हम छत्तीसगढ़ की प्रदेश सीमा को इस प्रकार खीचतें है। अमरकंटक से थोड़ी दूर नैऋत्य दिशा की ओर चलकर मेकल पर्वतों को लगातार छूती हुई यह सीमा 20 अक्षांश व 81 देशान्तर के मिलन बिन्दु के पास से होती हुई सालटेकरी व लाजी की घाटियों तक आती है, इसके पश्चात् यह थोड़ी पूर्व दिशा की ओर मुड़कर फिर नैऋत्य दिशा की ओर चलकर दक्षिण दिशा में घूम जाती है। 21 अक्षांश को पारकर यह थोड़ी पूर्व, फिर दक्षिण और फिर पूर्वी दिशा की ओर मुड़ जाती है। नांदगांव की सीमा समाप्त कर और शिवनाथ नदी को पार कर यह एकाएक फिर दक्षिण की ओर घूम जाती है।

दूर्ग जिले की तहसील संजारी को निहित करते हुये यह खरकरा नदी के पास से होते हुये आग्नेय दिशा की ओर बढ़ती है। 61 देशान्तर के पास यह सीमा नैऋत्य दिशा की ओर मुड़कर एक बहिष्कोण बनाती है।

अपने पथ को थोड़ा टेढ़ा मेढ़ा रूप देकर यह कांकेर के बाद अपने मार्ग को पुनः टेढ़ामेढ़ा कर देती है, फिर आग्नेय की ओर मुड़ जाती है। पारलाहट को अंतर्गत करते हुये इसकी सीमा कोठारी नदी के प्रवाह के साथ – साथ कोठारी व इंद्रावती की नदियों के संगम पर पहुंच जाती है। इस स्थान से इसकी दिशा इन्द्रावती के प्रवाह के विरूद्ध दूर – दूर तक चलती है।

19 अक्षांश व 81 देशान्तर के मिलन बिन्दु के पास से होती हुई यह सीमा इन्द्रावती को उत्तर में छोड़ती हुई दन्तेवाड़ा तक पहुंच जाती है।

---

1. एम.जी. दिक्षित :– मध्यप्रदेश की रूप रेखा पेज संख्या – 102

दंतेवाड़ा में डंकनी व शंकनी नदियों का संगम है। तदनंतर उसी आग्नेय दिशा का पथ अनुसरित करती हुई यह सीमा दरबार घाट तक पहुँच जाती है। दरबार घाट को अपने क्षेत्र में लेती हुई इसकी सीमा बस्तर राज्य में पूर्वी सीमा पर चलती हुई, जगदलपुर, जैतगिरि, व कमरिया को अंतर्गत करती हुई उत्तर की ओर बढ़ती है। 20 अक्षांश को पार करते ही यह सीमा महानदी के उद्गम-सर सिंहावा को अपने भीतर ले रायपुर सीमा को लगातार अनुसरित करती हुई चलती है।

तदनंतर देवभोग को दक्षिण, पूर्व व उत्तर से घेरते हुये यह रायपुर जिले के पूर्वी भू भाग पर निरन्तर चलती हुई उत्तर की ओर बढ़ जाती है। रायपुर जिले की सीमा को छोड़कर अब यह सुअरमाल को अंतर्गत करते हुये जोंग नदी का मार्ग अपनाती है।

21 अक्षांश पार करते हुये यह फिर रायपुर जिले में स्थित फूलझर राज्य को अंतर्गत करते हुये पूर्वी दिशा की ओर बढ़ता है फिर उसकी दिशा इशयान्य की ओर बढ़ जाती है और सरईपाली को अपने क्षेत्र में लेती हुई अब यह सारंगढ़ राज्य की राजनीतिक पूर्वी सीमा पर चलती है।

कुछ दूर चलने पर यह महानदी के बिल्कुल अनुकूल हो अपना मार्ग अपनाती है और पदमपुर तक आ जाती है इसके बाद यह रायगढ़ राज्य की पूर्वी सीमा का अनुसरण करती है। रायगढ़ राज्य को अंतर्गत करते हुए व 22 अक्षांश को पार करने के बाद ही उनकी सीमा फिर एकाएक इशान्य की ओर बढ़ते हुये जमशेद राज्य को अपनी सीमा में लेती है।

आर.सी. मजूमदार : द वैदिक एज पेज 26.

23 अक्षांश पार करने के बाद यह सरगुजा राज्य की पूर्वी सीमा पर 84 देशान्तर के समानान्तर चलती हुई फिर वायव्य की तरफ मुड़ जाती है तथा 24 अक्षांश पार करने के बाद ही उसकी सीमा फिर एकाएक नैर्ऋत्य की ओर चल पड़ती है 24 अक्षांश के आसपास होते हुये पश्चिम की ओर बढ़ती जाती है।

सरगुजा राज्य की उत्तरी राजनीतिक सीमा को अपने अंतर्गत कर यह सीमा कोरिया की उत्तरी सीमा पार कर लेती है 24 अक्षांश के समानान्तर होती हुई यह सीमा पश्चिम से दक्षिण व फिर नैऋत्य चलकर चांगभखार को बायें से ले 82 देशान्तर के पास आकर आग्नेय की ओर बढ़कर फिर दक्षिण की ओर आकर कोरिया की राजनीतिक सीमा पार करती है।

रीवां राज्य को दायें छोड़ती हुई यह सीमा अपना मार्ग नैऋत्य दिशा की ओर बनाती है और 23 अक्षांश और 82 देशान्तर के मिलान बिन्दु के पास पहुंचकर अमरकंटक पर आकर अपने प्रस्थान बिंदू को इस प्रकार छूती है कि छत्तीसगढ़ का मानचित्र बड़ी सरलता से बन जाता है।

जिस प्रकार भारत का हृदय स्थल मध्यप्रदेश को माना गया है उसी प्रकार मध्यप्रदेश का हृदय स्थल छत्तीसगढ़ कहलाता है जहां पर प्राकृतिक संपदा, खनिजं, कोयला आदि प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो रहे है।

राजनीतिक परिचय :-

छत्तीसगढ़ की राजनैतिक भूमिका को पुराने और नये मध्यप्रदेश की पृष्ठभूमि में ही संदर्भ सहित जाना जा सकता है।

एम.जी. दिक्षित :- मध्यप्रदेश के पुरातत्व की रूप रेखा।

भाषावार प्रांतो की रचना के फलस्वरूप 1 नवम्बर 1956 की भुष्य रात्रि को वर्तमान प्रदेश ने जन्म लिया। इसके पूर्व हिन्दी भाषी प्रदेशों के रूप में पुराना मध्यप्रदेश जिसे सी.पी.एण्ड बरार कहा जाता है या के अलावा विघ्यप्रदेश, मध्यप्रदेश और भोपाल राज्य थे, जिनके विलीनीकरण से नये मध्यप्रदेश का स्वरूप बना।

नये और पुराने इन राज्यों में देशी रियासतों का बाहुल्य था। मध्यभारत में ग्वालियर की सिंधिया शासित और इंदौर की होल्कर शासित बड़ी रियासतें थी। विन्ध्य क्षेत्र में रीवां राज्य से शासित कई छोटी बड़ी जमीदारियां थी। भोपाल की एक बड़ी रियासत थी 1948 के पूर्व इनके अपने अलग – अलग शासित राज्य थे और 1948 में रियासतों के विलीनीकरण के समय इन्हें विन्ध्यप्रदेश, मध्यभारत, और भोपाल राज्य का स्वरूप मिला। 1956 में भाषावार प्रांतो की रचना के समय मध्यप्रदेश के साथ मिलकर ये नये मध्यप्रदेश के अंग बन गये।[1.]

पुराने मध्यप्रदेश का बरार क्षेत्र महाराष्ट्र में विलीन कर दिया गया क्योंकि यह मराठी भाषी क्षेत्र था, पुराने प्रदेश का जो हिस्सा सेन्ट्रल प्राविन्सेंस (सी.पी.) कहलाता था उसमें महाकौशल और छत्तीसगढ़ प्रमुख क्षेत्र थे छत्तीसगढ़ को दक्षिण कौशल भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ में रायपुर, रायगढ़, दूर्ग, बस्तर, बिलासपुर, रायगढ़, सरगुजा छः जिले थे। 1972 में दूर्ग जिले को विभाजित कर राजनांदगांव जिला बनाया और सन् 1981 में बस्तर जिले को नये राजस्व संभाग का दर्जा प्रदान किया गया। महाकौशल क्षेत्र में मण्डला, बालाघाट, छिदवाड़ा, बैतूल, जबलपुर, नरसिंहपुर, होंशगाबाद, खण्डवा, निमाड़, सागर, दमोह जिले थे।[2.]

---

1. संदर्भ छत्तीसगढ़

2. संदर्भ छत्तीसगढ़.

पुराने मध्यप्रदेश क्षेत्र में महाकौशल क्षेत्र आमतौर पर गैर रियासती क्षेत्र था तेरह हजार वर्ग मील की बस्तर सबसे बड़ी रियासत थी जबकि 138 वर्गमील की शक्ति सबसे छोटी रियासत माना जाता है कि छोटी बड़ी 36 रियासतों के कारण भी यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ कहलाता है।1.

भाषावार प्रान्तों के निर्माण के समय हिन्दी भाषी क्षेत्रों की विलय की बात तो आमतौर पर सिद्धान्त स्वरूप थी परन्तु मध्यप्रदेश के साथ विकसित और अविकसित इलाकों के बीच संतुलित विलय के साथ ही आदिवासी और गैर आदिवासी क्षेत्रों के एकीकरण का प्रश्न भी था। नये प्रदेश में विलीय किये जाने वाले क्षेत्रों में ग्वालियर, इंदौर जैसी बड़ी रियासतों और विकसित क्षेत्र थे जो छत्तीसगढ़ के बस्तर और सरगुजा जैसी पिछड़ी आदिवासी बहुल रियासतें सामने थी। नये प्रदेश निर्माताओं का विचार था कि अविकसित और आदिवासी बहुत क्षेत्र को जब तक विकसित और गैर आदिवासी इलाके से जोड़ा नहीं जायेगा। उनका आर्थिक और सामाजिक विकास नहीं हो पायेगा। पिछड़े क्षेत्रों को विकास की मुख्य धारा से मिलाने का लक्ष्य भी सामने था। और कुल मिलाकर इन्हीं कारणों से मध्यप्रदेश का यह बड़ा स्वरूप बना और विभिन्न अंतरविरोधों और दबावों के बीच 37 वर्ष का जीवन यह प्रदेश पा चुका है।2.

नये प्रदेश के पूर्व विलीन हुये प्रदेशों की आर्थिक और विकास की स्थितियों के साथ ही राजनैतिक चेतना में बहुत अंतर था। पुराने मध्यप्रदेश के महाकौशल और छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम का सिलसिला कहा जा सकता है कि इस शदी के प्रथम दशक से ही सक्रिय था। जबकि विध्यप्रदेश, मध्यभारत और भोपाल में लगभग तीन दशक बाद सन् 30 के बाद इसकी आशिंक शुरूआत हुई। 3.

---

1. संदर्भ छत्तीसगढ़.

2.

3.

छत्तीसगढ़ में तो स्वतंत्रता संग्राम की शुरूवात नई मान्यताओं के अनुसार 1857 में हो चुकी थी जब वीर नारायण सिंह का विद्रोह हुआ माना जाता है। इस बात के ऐतिहासिक प्रमाण है कि पुराने मध्यप्रदेश की राजनैतिक चेतना पर लोकमान्य तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले के स्वातंत्र्य आंदोलन का असर था और सन् 1910 से 1915 के बीच छत्तीसगढ़ और महाकौशल गांधी जी के प्रभामण्डल में शामिल हो चुके थे।

छत्तीसगढ़ की विशेषता यह भी थी कि इस क्षेत्र की देशी रियासतें और जमीदारियां मध्यभारत और विन्ध्य अथवा भोपाल क्षेत्र की रियासतों की तरह स्वतंत्रता आंदोलन से अछूती वहीं थी। छत्तीसगढ़ की राजनीति में माघवराव सप्रे, वामन लाखे, सुन्दर लाल शर्मा जैसे अनेक नेता सक्रिय थे।

छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में आम तौर पर सब एक थे परन्तु वैचारित रूप से उन दिनों भी दो धारायें सक्रिय रही। एक का नेतृत्व स्व0 पण्डित रविशंकर शुक्ला के हाथ था तो दूसरे के साथ स्व0 सुंदर लाल शर्मा जैसे नेता था। परन्तु राजनीति में नेतृत्व पं. रविशंकर शुक्ल के हाथों था और उनका वर्चस्व भी। [2]

छत्तीसढ़ की राजनैतिक शक्ति, उसका स्वतंत्रता संग्राम के दिनों से अग्रणी होना तो है ही इसके अलावा इस क्षेत्र की नैसर्गिक सम्पदा ने उसके आधुनिक विकास की समस्त संभावनाओं के कारण भी उसे प्रदेश में अग्रणी और शक्तिशाली बना रखा है। लौह खनिज के अपूर भंडार के कारण देश का पहला इस्पात उद्योग भिलाई में स्थापित हुआ और वहीं से शुरू हुई इस देश की आधुनिक विकास यात्रा। [3]

---

1. संदर्भ छत्तीसगढ़.
2. वहीं
3. वहीं.

आज लगभग सभी आधुनिक उद्योग इस क्षेत्र में चल रहे है और आने वाले अगले 100 वर्षो के लिये भी प्रदेश के विकास की समस्त संभावनायें केवल छत्तीसगढ़ क्षेत्र में ही है। छत्तीसगढ़ में धान प्रमुख फसल है जबकि अब तक वैकल्पिक दूसरी फसल तैयार नहीं की जा सकी है।

90 विधायकों और 11 सांसदों को निर्वाचित करने वाले छत्तीसगढ़ क्षेत्र का प्रदेश की राजनीति में वर्चस्व बराबर बना हुआ है परन्तु संभावनाओं, क्षमता तथा अपेक्षाओं के अनुरूप विकास नहीं होने से असंतोष के कई मुद्दे है जो राजनीति के मुद्दे बने हुयें है।

छत्तीसगढ़ की राजनैतिक विचारधारा में प्रारंभ से कांग्रेस का प्रभाव और वर्चस्व रहा है और पिछले 31 वर्ष व उसके पूर्व से कांग्रेस ही प्रमुख दल है। राष्ट्रीय स्तर पर जो विचार धारा जिस दौर में प्रभावी रहा उसका ही असर छत्तीसगढ़ में ही रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कांग्रेस और स्वराज्य पार्टी का प्रभाव था। आजादी के बाद पहले दशक में समाजवादी प्रमुख विपक्षी था। [1]

छत्तीसगढ़ की राजनीति उसके महत्व और अकांक्षाओं को दर्शाने के लिये कुछ आकड़े तर्क संगत होगे :-

प्रदेश के 40 लोक सभा क्षेत्र में से 11 लोकसभा क्षेत्र छत्तीसगढ़ में है प्रदेश के सुरक्षित 15 क्षेत्रों में 6 छत्तीसगढ़ में है प्रदेश में हरिजन सुरक्षित क्षेत्र 6 है जिसमें से 2 छत्तीसगढ़ में है प्रदेश में आदिवासी सुरक्षित क्षेत्रों की संख्या 9 है जिसमें से 4 क्षेत्र छत्तीसगढ़ में है।[2]

प्रदेश में 320 स्थानों में से 90 विधानसभा क्षेत्र छत्तीसगढ़ में है। 119 आरक्षित क्षेत्रों में से 44 छत्तीसगढ़ में है जिनमें 4 आदिवासी सुरक्षित क्षेत्रों की संख्या 34 है जबकि हरिजन सुरक्षित क्षेत्र 10 है जबकि प्रदेश की सुरक्षित क्षेत्र हरिजन 44 और आदिवासी 74 है। [3]

---

1. संदर्भ छत्तीसगढ़.
2. वही.
3 वही.

प्रदेश की कुल जनसंख्या 6,61,18,11,60 है जिसमें छत्तीसगढ़ की जनसंख्या 1,76,14,928 है। प्रदेश में हरिजनों की संख्या 96,26,679 है जबकि छत्तीसगढ़ क्षेत्र में 21,48,358 है। प्रदेश में आदिवासियों की संख्या 1,53,99,034 है जिसमें छत्तीसगढ़ क्षेत्र में 57,17,124 है।

छत्तीसगढ़ में ग्रामीण आबादी 14550235 है जबकि शहरी आबादी 3064793 है। इन आकड़ो से स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ की अधिकांश आबादी ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों में है और इनके विकास की न केवल जरूरत है वरन् इन्हीं ग्रामीण क्षेत्र में खनिज और वनों के नैसर्गिक साधन भी उपलब्ध है। इसीलिये इन्हीं क्षेत्रों में विकास की संभावनायें है।

आकड़े आबादी के हों या जन प्रतिनिधियों के, किसी भी क्षेत्र की राजनैतिक शक्ति है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र का इसलिये प्रदेश की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान है और वहीं शायद दिशा भी निर्धारित करता है।"[1]

---

1. संदर्भ छत्तीसगढ़.

छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों के विभिन्न वर्ग :-

यूं तो छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों ही नहीं अपितु सभी धर्म और वर्ग के लोग रहे है, परन्तु हमारे शोध प्रबंध में विशेष वर्ग ब्राह्मणों का उल्लेख अत्यन्त आवश्यक हो गया है जिन्होंने भारत माता की आजादी के लिये अपना तन, मन धन सब न्योछावर कर दिया है।

छत्तीसगढ़ में सरयूपारीय बाह्मणों के अलावा कान्य कुब्ज, साण्डील्य, गौतम, सनाड्य आदि अन्य ब्राह्मण गोत्र के ब्राह्मण तो है ही, इसके अलावा मराठी, पंजाबी, राजस्थानी, हरियाणी आदि ब्राह्मण भी यहां पर आकर बस गये है, यहां पर ब्राह्मणों का कोई अलग गुट नहीं था बल्कि सभी ब्राह्मण वर्ग एक साथ एक जुट होकर अपना और अपने देश की आजादी के लिये जी जान से लग गये और देश की सेवा में न्यौछावर हो गये।

छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों की स्थिति आज भी वहीं है जो आजादी के 50 वर्ष पहले थी अपितु और दिनों दिन गिरती जा रही है, परन्तु फिर भी ब्राह्मण अपने उत्थान के लिये प्रयत्नशील है और अपना तथा समाज का आपस में संबंध बढ़ाने के लिये कुछ ना कुछ योगदान दे रहे है।

छत्तीसगढ़ में जो भी ब्राह्मण वर्ग बसे हुये है वे कुछ तो जीविकोपार्जन के लिये आये है तो कुछ अंग्रेजों के शासन काल में, कुछ मराठों के समय आये है, तो कुछ मुगल काल में तिर्थाटन या जीविकोपार्जन के लिये आकर बस गये है। इनमें से प्रमुख ब्राह्मण वर्ग है :- गौड़, आदिगौड़, जिझौतिया, शांडिल्य, भारद्धाज, आद्यगौड़, सरयूपारीय, कान्य कुब्ज, भट्ठ ब्राह्मण, सनाड्य ब्राह्मण, जिजोदिया, गढ़वाली ब्राह्मण, भार्गव ब्राह्मण, नार्मदीय ब्राह्मण, सारस्वत् ब्राह्मण, दाधीची ब्राह्मण, कुंमाउनी ब्राह्मण, गोस्वामी ब्राह्मण, गौड़ ब्राह्मण, गुर्जर ब्राह्मण, विश्वकर्मा ब्राह्मण, औदिच्चय ब्राहमण, सेकवाल ब्राहमण, पुष्कुरणा ब्राह्मण, ब्रह्मा भट्ठ ब्राह्मण, वैष्णव ब्राह्मण, श्रीमाली ब्राहमण, पारीक ब्राह्मण, अग्निहोत्री ब्राह्मण नागदाह ब्राहमण, पारासर ब्राहमण, नागर ब्राहमण आदि विभिन्न ब्राहमण हमारे छत्तीसगढ़ में आकर बसे हुये है, और अपने समाज के उत्थान की दिशा में कार्य कर रहे है, जैसे रोजगार, शादी व्याह आदि।

छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों का आगमन एवं उनकी गतिविधियां :-

आगमन :- छत्तीसगढ़ में आज छत्तीसगढ़ी ब्राह्मणों का परिवार बहुत ही विस्तृत है। छत्तीसगढ़ के सात जिला मुख्यालयों तथा करीब हजार से अधिक गांव में इनकी जनसंख्या काफी तौर पर (करीब तीन लाख) उपस्थित है, मूलतः ये सब सरयूपारीण है तथा छत्तीसगढ़ में इनका आगमन 300 वर्ष से भी पहले का है। [1]

सोलहवीं सदी के उत्तरार्ध में जब भारत वर्ष में मुगलों ने आधिपत्य जमाया तब मुसलमानों ने विभिन्न वर्गो को नाना प्रकार से दण्ड तथा कर देने के लिये बाध्य कर दिया इनमें से एक वर्ग ब्राह्मण वर्ग भी रहे, जिन्हें मुगलों ने अत्यधिक त्रस्त कर रखा था। ब्राह्मणों को पकड़कर जबरदस्ती उनका धर्म भ्रष्ट किया जाता था, उनकी शिखायें काट ली जाती थी और उनके जनेऊँ का अपमान भी किया जाता था। युद्ध में हिन्दुओं को गाय के चर्बी वाले कारतूस चलाने के लिये दिया जाता था जबकि हिन्दू गाय को मां के सामान मानते है और उसकी पूजा करते है, गौ हत्या को सबसे बड़ा पाप समझते है, उसी गाय को मारकर उसके चर्बी से कारतूस बनाकर उसको उपयोग करने के लिये हिन्दूओं को बाध्य किया जाता था, इस तरह से ब्राह्मणों का जीना दूस्वार हो गया था वे जीते जी मरे हुए के समान हो गये थे।[2]

तब उन्होंने निश्चय किया कि यह जीवन मौत से बदतर है अगर जीना है तो हमें किसी अन्य क्षेत्र में जीवन यापन करना होगा नहीं तो मर जाये। सोलहवीं सदी में दक्षिण कौशल पर "माराठा शासक" राज्य कर रहे थे और उन्हें भी अपने राज्य के लिये योग्य व्यक्तियों की जरूरत थी ब्राह्मणों के दक्षिण कौशल आगमन पर मराठों ने उन्हें जमीन आदि देकर बसाया और उन्हें उनके योग्य पद देकर स्थापित किया।

---

1. रामगोपाल तिवारी अभिनंदन ग्रंथ :- पेज 43.
2. वहीं.

जब रतनपुर में हैहयवंशी राजा राज्य किया करते थे 1745 के आसपास छत्तीसगढ़ में मराठों का प्रभाव बढ़ गया था तब तक पूरे छत्तीसगढ़ के सूदूरगांव में सरयूपारीण ब्राह्मण आकर बस गये थे। 1.

ब्राह्मणों के यहां पर आकर बसने के बारे में एक कारण यह भी बताया जाता है कि रतनपुर के राजा को वृद्ध यज्ञ के आयोजन में बड़ी संख्या में ब्राह्मणों की आवश्यकता और उन्होंने इसके लिये आज से तीन – चार सौ वर्ष पहले उत्तर सरयू के किनारे से 108 ब्राह्मण परिवार को आमंत्रित किया।

ब्राह्मण परिवार के रहने के लिये व जीवन यापन के लिये रतनपुर के राजा ने अनेक गांवों को दान में दे दिया, उस समय ब्राह्मण का प्रमुख कार्य उपरोहिती ही था। एक तो 16 वीं सदी के मुगलों के अत्याचार से त्रस्त उत्तर सरयू के ब्राह्मण को यह प्रान्त बड़ा ही शांत और सुरक्षित लगा, जिससे प्रभावित होकर उन्होंने यही बसने का निर्णय ले लिया।

उत्तरप्रदेश से जगन्नाथपुरी तीर्थाट के लिये आने वाले ब्राह्मणों के लिये दक्षिण कौशल कोई नया क्षेत्र नहीं था। सभी इस शांत क्षेत्र से भली भांति परिचित थे। 2.

सोलहवीं सदी में औरंगजेब के समय में उसके अत्याचार से हिन्दू नागरिक तो परेशान थे ही उन्होंने मुसलमानों को भी त्रस्त कर रखा था, मुगल शासक औरंगजेब ने जनता के लिये अत्यधिक कर लगा रखा था। हिन्दूओं के लिये जजिया कर भी था जिससे वे किसी भी प्रकार से न दे सकने के कारण वहां से पलायन कर जाना चाहते थे। अपनी ही मातृभूमि में रहने के लिये उन्हें कर देना

---

1. शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ : पेज 59.

2. आबिद अभिनंदन ग्रंथ पेज 59

पड़ता था। इस तरह से ब्राह्मणों के छत्तीसगढ़ आने के कई कारण थे।[1]

गतिविधियां :

अत्याचार और असत्य के विरूद्ध आवाज उठाना प्राचीन काल से ही ब्राह्मणों का नैतिक उत्तरदायित्व रहा है। उनका प्रमुख कार्य परंपरागत गुरू – शिष्य परंपरानुसार संस्कृत वाङ्मय अध्ययन करना और दूसरा कार्य कर्मकाण्ड और संस्कारों की भावना का पुनः उत्थान करना था।[2]

उस समय दक्षिण कौशल (छत्तीसगढ़) में मराठों का राज्य था, उन्हें भी योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता थी उन्होंने ही अपने राज्य में उन ब्राह्मणों को बेहार, नेगी, सलाहकार और मालगुजार आदि के पदों में उनके बौद्धिक स्तर के अनुसार पद दे दिया।

"ब्राह्मणों की विशेषता उनकी जाति नहीं बल्कि उनका ज्ञान चरित्र समाज के लिये त्याग बलिदान करने की क्षमता बस यही है।"[3]

---

1. शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ : पृष्ठ
2. विद्या निवास मिश्र (प्रधान संपादक) नवभारत टाईम्स, नई दिल्ली
   सरयूिद्धिज पत्रिका, पेज नं.
3. वहीं.... पेज नं.

कांग्रेस का जन्म और राष्ट्रीय चेतना का छत्तीसगढ़ में उदय :-

कांग्रेस का जन्म :-

19 वीं शताब्दी के मध्य तक भारत में राष्ट्रीय चेतना पर्याप्त मात्रा में व्याप्त हो चुकी थी। इसकी अभिव्यक्ति विभिन्न धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक संगठनों के रूप में होने लगी थी। ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति विरोध तथा असंतोष भावना ने उन्हें संगठित मोर्चा लेने को बाध्य किया। राष्ट्रीय आंदोलन को संगठित करने के लिये अनेक राजनीतिक संगठनों का उदय हुआ। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना भारतीयों की एक संपूर्ण देश की प्रतिनिधि राजनीतिक संगठन की स्थापना की इच्छा की पूर्ति थी।[1]

यद्यपि देश के विभिन्न प्रान्तों और नगरों में अनेक राजनीतिक संगठनों की स्थापना की जा चुकी थी, फिर भी देश में एक अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन का आभाव खटक रहा था। 1877 के दिल्ली दरबार के अवसर पर "श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी" ने ऐसी संस्था की आवश्यकता का अनुभव किया। इस दिशा में ठोस कदम उठाने में एक अवकाश प्राप्त अधिकारी ए.ओ.ह्यूम ने नेतृत्व प्रदान किया। उन्हें ही "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस" का जनक कहा जाता है।[2]

उद्देश्य :-

कांग्रेस की स्थापना के संबंध में भिन्न - भिन्न मत है। कुछ विद्धान इसकी स्थापना का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा बताते है। और कुछ इसे भारतीय राष्ट्रीयता का माध्यम बताते है।[3]

---

1. राजेन्द्र मोहन भटनागर :- भारतीय कांग्रेस का इतिहास, पृष्ठ 65.
2. सावरकर : 1857 का भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास पेज 10-25.
3. वीरकेश्वर प्रसाद :- भारत का संवैधानिक एवं राष्ट्रीय आंदोलन, पेज 76

"A safety value for the escape of great and growing Forces was urgently needed and no more efficacious sufety value then one congress movement could possibly device."

-- Sir William Wederbern.

"कांग्रेस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी साम्राज्य को खतरे से बचाना था। भारत की राजनैतिक स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न करना नहीं।"

-- लाला लाजपतराय . 2.

"उस समय भारत पर ऐसे आक्रमण का विशेषभय था जिसके निवारण के लिये भारतीय आंदोलन को ठीक दिशा में बल देना आवश्यक था।

डॉ0 नन्दलाल चटर्जी.

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में सभापित उमेशचन्द्र बनर्जी ने कांग्रेस के निम्नलिखित उद्देश्य बताये है :-

1. देश हित के लिये काम करने वालों में घनिष्टता और मित्रता बढ़ाना।
2. राष्ट्रीय एकता की भावना का विस्तार करना।
3. महत्वपूर्ण और आवश्यक सामाजिक प्रश्न पर समितियां संग्रह करना।
4. देश – हित के लिये साधनों और दिशाओं का निर्णय करना। 3.

वस्तुतः पहले इसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी तथा राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करना नहीं था भले ही धीरे – धीरे इसका उद्देश्य राजनीतिक हो गया तथा इसका अंतिम लक्ष्य स्वतंत्रता प्राप्ति हो गया।

---

1. राजेन्द्र मोहन भटनागर : भारतीय कांग्रेस का इतिहास : पृष्ट 77.
2. वीरकेश्वर प्रसाद – भारत का संवैधानिक एवं राष्ट्रीय आंदोलन पेज 77.
3. वहीं :– पेज 78.

अट्ठारह सौ संतावन की क्रांति का छत्तीसगढ़ पर प्रभाव :-

अंग्रेजों ने भारत पर पैर जमाने के साथ साथ अमानवीय अत्याचार प्रारंभ किये जिससे छत्तीसगढ़ भी अछूता नहीं रहा। राजनीतिक अत्याचारों के साथ धार्मिक अत्याचार भी प्रारंभ हो गये, जैसा कि ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टरों के चेयरमेन मैन्ग्लीज ने 1857 में हाउस आफ कामन्स में कहा था "ईश्वर ने भारत का यह शान से पूर्ण राज्य इंग्लैण्ड को इसलिये सौपा है ताकि भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक इसा मसीह की विजय झंडा लहराने लगे।"

भारत के स्वर्णिम इतिहास में 1857 की क्रांति एक युग बोधक घटना थी क्रांति के स्वरूप के संदर्भ में विद्वानों ने अलग अलग राय दी है किन्तु आजादी का यह संघर्ष स्वतंत्रता प्राप्ति का सूत्रपात माना जाता है जो 1947 में फलीभूत हुआ भारत के इतिहास में इसका महत्व एवं गौरव इसलिये भी माना जाता है कि विदेशी अधिपत्य और अत्याचारों के विरूद्ध भारतीयों द्वारा किया गया यह प्रथम संगठित प्रयास था। [1]

1857 की इस क्रांति में अंग्रेजों ने एक नई रायफल अपनी सेना में प्रारंभ की थी जिसके कारतूसों को दांतो से काटना पड़ता था और इन कारतूसों में चिकनाई हेतु गाय और सूअर की चर्बी का उपयोग किया गया था। भारत में अंग्रेजी सेना में हिन्दू और मुसलमान दोनों थे और इस कार्य में दोनों के धर्मो के विपरीत आचरण होता। इसके अलावा भी अन्य बहुत से कारण सेना में सिपाहियों में असंतोष फैलाकर धर्म पर कुठाराघात के रूप में अंग्रेजों ने अपनाये थे जैसे पगड़ी बांधना, मस्तक पर टीका लगाना, आदि प्रतिबंधित कर दिये थे। [2]

---

1. हार्डीकर – माधव राव सप्रे पृष्ट 223.

2. आबिद. : माधव राव सप्रे

इस क्रांति में कारतूसों की घटना ने विस्फोट कर दिया और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के उद्घोषक थे: मेरठ के सिपाही मंगल पांडे। यद्यपि अंग्रेजों ने शक्ति से इस विद्रोह का दमन कर दिया और मंगल पाण्डे को फांसी देकर सोचा कि सब कुछ शान्त हो जायेगा किन्तु शहादत यों व्यर्थ नहीं जाती मंगल पांण्डेय की शहादत एवं उनके उद्घोष जंगल में आग की तरह देश के विभिन्न क्षेत्रों के सिपाहियों में फैल गया।[1]

इस आंदोलन के बारे में सर विलियम हावर्ड रसेल ने "माई डायरी इन इण्डिया इन दी इयर 1858–59 में लिखा है कि एक ऐसा युद्ध था जिसमें जनता अपने धर्म के नाम पर और अपने राष्ट्र के नाम पर बदला लेने के लिये और अपनी आशाओं को पूर्ण करने के लिये उठी थी। इस युद्ध में सारे राष्ट्र ने अपने उपर से विदेशियों के जुये को उतार फेककर उसके स्थान पर देशी शासकों और देश के धर्मो को पुनः पूर्ण रूपेण शक्तिशाली बनाने का निर्णय ले लिये था।

"डॉ0 नार्टन भी मानते है कि यह विद्रोह केवल सिपाहियों द्वारा शुरू किया गया विप्लव ही नही बल्कि एक जन साधारण विद्रोह था।

कुछ विद्वान इसे मात्र सैनिक विद्रोह मानते है :– लारेंस और सर जान सिले मानते है : कि 1857 की क्रांतिपूर्ण रूप से राष्ट्रीय तथा सैनिक विद्रोह था। जिसका न कोई देशी नेतृत्व था और न जनता का सहयोग।

पी.ई.राबट्स आदि विद्वान भी इसी कथन को सत्य मानते है।

---

1. आर.सी. मजूमदार :– हिस्ट्री आफ फ्रीडम मूव्हमेंट इन इंडिया. खण्ड – 1

पृष्ठ 302.

इन सबसे अलग सर जेम्स अडटरम इसे मुगल सम्राट बहादूर शाह के नेतृत्व में अंग्रेजी सत्ता का उन्मूलन कर पुनः अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिये किया जाने वाला भारतीय मुसलमानों का षडयंत्र बताते है। किन्तु विद्धान इससे सहमत नहीं है। क्योंकि इसमें झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, नाना साहब, कुंवर सिंह, अवध के ताल्लुकेदारों आदि ने संचालन किया था। अतः इस क्रांति के संबंध में किसी विशेष संप्रदाय या विशेष धर्म से नहीं था बल्कि यह हिन्दुओं और मुसलमानों का अंग्रेजों के विरूद्ध एक संयुक्त संघर्ष था।

"प्रमुख देश भक्त वीर सावरकर कहते है कि यह चरम सत्य है कि एक छोटा सा मकान बिना मजबूत नींव के नहीं बनाया जा सकता।"

सावरकर ने दि इंडियन वार इंडिपेडेंस में उपर्युक्त एवं सही उल्लेख किया है कि आंदोलन के इतिहास को लिखने वाले लेखक यदि 1857 के इस भारतीय सूत्रपात को नकारते है तथा आंदोलन के पीछे छिपी हुई दृढ़ प्रतिज्ञा को अपने वर्णन में स्थान नहीं देते और यह मानते है कि आंदोलन का आधार वस्तु तिनके के ऊपर खड़ा था तो वे या तो मूर्ख है या तो संभवतः इनको इसका ज्ञान नहीं है अतः निश्चित ही वे इतिहासकार बनने योग्य नहीं है।

इस आंदोलन की जड़े बहुत ही गहरी थी प्लासी के युद्ध के बाद कंपनी की सत्ता बहुत तेजी से फैल रह थी प्रायः भारतीय रियासतों को या तो कंपनी की सत्ता में मिला लिया गया था, या भारतीय शासक कठपुतली बना दिये थे। सतारा, नागपुर, झांसी एवं कई मराठा रियासतें समाप्त कर ली गई थी, पेशवा बाजीराव द्वितीय के बाद उनकी वित्तीय सहायता बंद कर दी गई थी।[1]

---

1. व्ही.ए. स्मिथ :– द अर्ली हिस्ट्री आफ इंडिया, पृष्ठ – 22

कंपनी की आर्थिक नीतियों से भारत के छोटे उद्योग नष्ट कर दिये गये थे। उन्नसवीं सदी में यह असंतोष और भी बढ़ा जब अंग्रेजों ने भारतीयों की धार्मिक, सामाजिक रीति रिवाजों में हस्तक्षेप प्रारंभ कर दिया। यह भी सहीं है कि अंग्रेजों के कुछ सुधार भारतीय कुरीतियों को समाप्त करने और रहन सहन सुधारने में सहायक थे किन्तु विदेशी शासन को भय और शंका से देखने के कारण और अधिकांशत: अत्याचारी नियमों के कारण कुछ न कुछ उन सुधारों को भी भारतीयों ने शंका से ही देखा। जैसे सती प्रथा समाप्ति के नियमों 1856 में विधवाओं के लिये पुर्नविवाह का कानून यद्यपि सृजनात्मक सुधार थे किन्तु भारतीय जनता के मन में विदेशी शासन के प्रति एक अविश्वास की भावना घर कर गई थी, अत: स्वाभाविक रूप से लोगों ने यह महसूस किया कि उनका धर्म और सामाजिक जीवन भी बहुत खतरे में हैं।

विदेशियों के निरंतर अत्याचारों का प्रतिफल थी 1857 की क्रांति। यह आग बैरकपुर, मेरठ ही नहीं पूरे संयुक्त प्रान्त में फैली हुई थी। झांसी तक इसका विस्तार हो गया था सिपाही बिना किसी पूर्व योजना के मैदान में कूद पड़े किन्तु मेरठ में वे अधिक समय तक नहीं टिक सके यहीं से क्रांति की ज्वाला प्रारंभ हुई। बहुत से सिपाही मेरठ से दिल्ली की ओर घढ़े तथा नावों से बने पुल द्वारा जमुना पार कर वे दिल्ली के नाम मात्र किन्तु मान्य बादशाह अस्सी वर्षीय अबू जाफर सिराजुद्दीन बहादूरशाह के सामने पहुंचे और बादशाह से नेतृत्व की प्रार्थना की कुछ संकोच के बाद बादशाह ने स्वीकृत दे दी एवं इस प्रकार इस विप्लव को वैद्यता मिल गई और इसकी मान्यता राजनैतिक हो गई और सिपाही अपने बादशाह के नाम पर युद्धरत हो गये।

वीर सावरकर :- द इंडियन वार आफ इंडिपेन्डेस, पृष्ठ 36

लार्ड बेकन ने उल्लेख करते हुए मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में लिखा है राजद्रोह के कारण और प्रेरक तत्व है। धर्म में नये परिवर्तन करना, विशेषाधिकारों की समाप्ति, व्यापक दमन, अयोग्य व्यक्तियों की उन्नति और भी अनेक कारण है जो विरोध करने वालों को समान रूप में संगठित कर देते है।

इस प्रकार सभी कारण अंग्रेजी शासन में इकट्ठा हो गये थे एवं इनसे उठने वाली भारतयों की हृदय की टीस धीरे – धरे उनके हृदय में क्रांति के पौधे को विकसित कर रही थी यही प्रस्फुटित हुई।

महान स्वतंत्रता सेनानी सावरकर ने लिखा है और बहादूर जफर की घोषणा को बताया है कि हिन्दूस्तान के पुत्रों हम अपना मस्तिष्क दृढ़ कर लें तो दुश्मनों को अल्प समय में ही नष्ट कर सकते है और जीवन से भी बहुमूल्य अपने धर्म और देश को विदेशियों के काले कारनामों से मुक्त कर लेंगे।

सम्राट बहादूर शाह जफर ने घोषणा की कि हिन्दू और मुस्लिम दोनों एक जूट होकर इस युद्ध में भाग लेंगे।

किन्तु भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अब्दुल कलाम आजाद सावरकर के मतों को न मानकर कहते है कि 1857 से संबंधित विभिन्न अभिलेखों के अध्ययन के बाद कुछ इस तरह के निष्कर्ष निकलते है इसमें कोई शंका नहीं कि स्वतंत्रता संग्राम के वीर सेनानी यद्यपि देशक्ति की भावना से ओतप्रोत हो प्रेरित एवं उत्तेजित थे। किन्तु उनकी यह भावना ही विद्रोह उत्पन्न के लिये पर्याप्त नही थी।

दिल्ली सम्राट बहादूर शाह जफर का कथन :–

"हमारें वीरों के अंतः करण में जब तक आत्मविश्वास और देश भक्ति की भावना विद्यमान है तब तक हिन्दूस्तान की पावन कृपाण लंदन तक भी वार करती रहेगी।"

"गजियों में बू रहेगी, जब तलक इमान की।
तख्ते लंदन तक चलेगी, तेग हिन्दूस्तान की।।

---

1. सावरकर साहित्य : 1857 का भारतीय स्वातंत्रय समर, पृष्ठ 485

इतिहास में 1857 का विद्रोह भारत में अंग्रेज सत्ता के लिये बहुत बड़े स्तर पर एक बड़ी चुनौती के रूप में माना जायेगा। जिस प्रकार के राष्ट्रीय आदोंलन की भावना से जनता अभिभूत हुई, स्वतंत्रता सेनानियों के दिलों में उससे जो उद्यम साहस पैदा हुआ तथा जिससे एक कठिन युद्ध की इतिहास चक्र घटना घटी, और जिससे नैतिक मूल्यों का अहसास लोगों को हुआ उसका मूल्यांकन ही नहीं किया जा सकता।

हम ऐसा मान सकते है कि चूंकि एक सामान्य संहार का वातावरण समूचे देश में व्याप्त था इसलिये यह विद्रोह कई स्थानों पर स्वयं ही प्रारंभ हो गया। यह पूर्व नियोजित नहीं था।

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि :–

इस 1857 के महान विप्लव के साथ साथ छत्तीसगढ़ में भी क्रांति की आग भड़क उठी, जनचर्या एवं अफवाहों की आंधी चारों ओर फैलने लगी। छत्तीसगढ़ अंचल भी देश के पावन समर हेतु जागृत हो उठा। उस समय राष्ट्रीय थल सेना की तीसरी टुकड़ी का मुख्यालय रायपुर में ही था और उसका शेष भाग बिलासपुर में अरपा नदी के किनारे बसा हुआ था। मई 1857 में मेरठ में घटित घटना का पता मध्यप्रान्त के लोगों को भी चला। परिणामतः सेना की टुकड़ियों में एक असंतोष की भावना उसी समय पनप उठी। इस प्रकार शताब्दियों से अलग – अलग यह क्षेत्र भी क्रांति रूपी ज्वाला से धधक उठा।[1]

अशोक शुक्ल :– छतीसगढ़ का राजनीतिक इतिहास तथा राष्ट्रीय आंदोलन,

पृष्ठ 45.

देश व्यापी इस आशांति की प्रतिक्रिया छत्तीसगढ़ में भी परिलक्षित होने लगी। सात सितम्बर 1857 तक यह अशांति अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई इसका प्रमाण है कि अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में इसे महसूस किया और रायपुर के अंग्रेज डिप्ट कमिश्नर ने अपने मुख्यालय नागपुर के कमिश्नर को क्रांति कि इस क्षेत्र में संभावना को रोकने के लिये अतिरिक्त सैन्य बल भेजने का आग्रह कियां और इसीलिये नागपुर के कमिश्नर ने मद्रास के अपने अंग्रेज अधिकारियों को तार से सूचना भेजकर बहरामपुर से सेना की पांच टुकड़ियों को तत्काल रायपुर प्रस्थान करने का आदेश भेजा, ताकि आवश्यकतानुसार यह सेना यहां पर पहुंच सके। [1]

छत्तीसगढ़ का यह क्षेत्र क्रांति के लिये उपयुक्त भी था और यदि समूची क्रांति को सुसंगठित और सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया गया होता तो क्रांति की जो ज्वाला यहां इस अचंल में प्रज्जवलित होती है वह पूरे पश्चिमी मध्यप्रदेश, भंडारा, चांदा से लेकर पूर्व में उड़ीसा और पूर्वी बंगाल को जलाकर खाक कर देती।

नागपुर के कमिश्नर ने 27 जनवरी 1858 को अपने एक पत्र में मेजर व्हाईट लाक को लिखा भी है : "रायपुर जिले में यदि क्रांति भड़क उठी होती तो तत्संबंधी क्षेत्रों के जमीदारीं में भी इसके अंतर्गत देश के पूर्वी और उत्तरी भाग तथा भंडारा, चांदा की जमींदारी भी आती है तथा इस प्रान्त के पश्चिमी भाग को यह प्रभावित करती है। यदि हम यह क्रांति इतने व्यापक पैमाने पर इतने कठिन और विकराल रूप में विकसित होती तो बिना एक विशाल सेना की आहूती के इस पर नियंत्रण करना असंभव हो जाता।

---

1. अशोक शुक्ल :– छत्तीसगढ़ का राजनैतिक इतिहास व राष्ट्रीय आंदोलन.

   पृष्ठ 46.

2. आबिद :–

अंग्रेज अधिकारियों का यहां के लिये ऐसा सोचना असत्य नहीं था। पंद्रह अक्टूबर अट्ठारह सौ संतावन को गुरूर सिंह, रणमंत सिंह और संबलपुर के कुछ अन्य जमींदारों के नेतृत्व में एक विशाल संख्या में विद्रोही एकत्रित हुये तथा उत्तर की ओर सोहागपुर के कुछ अन्य ताल्लुकों में प्रविष्ट हुये, किन्तु तत्काल बाद ही रायपुर के डिप्टी कमिश्नर ने अपनी स्थानीय सेना के साथ सोहागपुर के पास इन विद्रोहियों पर आक्रमण पर आक्रमण कर दिया तथा जो संघर्ष प्रारंभ हुआ उसमें अंग्रेजी सेना के कुछ अश्वारोही तथा घोड़े हताहत हुये। यद्यपि अंग्रजों को सत्रह विद्रोहियों को बंदी बनाने में सफलता मिली। किन्तु शीघ्र ही वे अंग्रेजों के चंगुल से निकल कर भाग गये। इन विद्रोहियों का नेता सतारा के भूतपूर्व वकील रंगा बापूजी था। और सोहागपुर में इन विद्रोहियों की स्थिति मजबूत थी और उन्होंने रायपुर के जमीदारों को भी अपने झंडे के नीचे एकत्रित होने का आह्वान किया था। [1]

---

1. प्रयाग दत्त शुक्ल :– क्रांति के चरण पृष्ठ 312.

राष्ट्रीय जागरण :-

"A people who have become Politically organised."

-- Rose [1].

"A giant of the Forest with millenia behind it."

-- Shrimati Anibecant.[2].

"The nationalist movement of the Latter period was an enlightened Political movement."

-- Dr. Raghuvanchi.[3].

1857 के स्वतंत्रता के महासमर के समय ही छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण प्रारंभ हो चुका था। सन् 1857 ई. का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र का भी इस महासमर में विशिष्ट योगदान है। जहां एक ओर छत्तीसगढ़ के जमींदारों ने अंग्रेजों की सत्ता को चुनौती दी थी वहीं दूसरी ओर तीसरी पैदल सेना (थर्डनेटिव इंफेट्री) के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया था। और 1857 में जब भारत में राष्ट्रीय जागरण परिलक्षित हुआ उसी काल में छत्तीसगढ़ में भी राष्ट्रीय भावना दृष्टिगोचर हुई। छत्तीसगढ़ में 1857 ई.के स्वतंत्रता के महासंग्राम की भूमिका निम्नानुसार है। [4].

1- सोनखान के जमीदार नारायण सिंह का विद्रोह.

2. रायपुर में संघर्ष.

3. संबल पुर के सुरेन्द्र साय का विद्रोह.

4. रायपुर में सैन्य विद्रोह.

5. उदयपुर का विद्रोह.

---

1. जे.पी.शर्मा : मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आंदोलन : पेज 43.

2. वीरकेश्वर प्रसाद : भारत का संवैधानिक एवं राष्ट्रीय आंदोलन पेज 72.

3. वहीं.

4. संदर्भ छत्तीसगढ़ पेज 24

सोनाखान के जमींदार नारायण सिंह का विद्रोह :-

रायपुर जिले के बलौदा बाजार तहसील में स्थित सोना खान कल्चुरियों के समय एक जमीदारीं थी। मराठों के काल में भी यह महत्वपूर्ण जमींदारी बनी रही, 1818 ई. में ब्रिटिश संरक्षण के काल में यहां के जमींदार ने अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह किया था। तात्कालिक अंग्रेज अधिकारी केप्टन मेक्सन ने 1819 ई. में सोनखान पर आक्रमण कर उसे पराजित कर दिया। रामाराय को विवशता में संधि करनी पड़ी। अंग्रेजों ने सोनखान के जमींदार के अनेकों गांव जप्त कर लिये। किन्तु स्वतंत्रता की भावना रामाराय के वंश में चलती रही। लगभग 1930 के आसपास रामाराय की मृत्यु हो गई और नारायणसिंह सोनाखान के जमींदार नियुक्त हुए अगस्त 1856 ई. में सोनाखान जमींदारी में भीषण अकाल पड़ा। कसडोल के एक साहूकार ने काफी मात्रा में अनाज एकत्रित कर रखा था। नारायण सिंह ने उक्त साहूकार का अनाज अपनी भूखी प्रजा में बटवा दिया तथा इस बात की सूचना अंग्रेज अधिकारियों को भी दे दी। कसडोल के साहूकार ने भी इस बात की शिकायत अंग्रेजों से की, जिससे अंग्रेज अधिकारियों को मौका मिल गया, 24 अक्टूबर 1856 को नारायण सिंह को लूटपाट और डकैती के आरोप में गिरफ्तार कर रायपुर के जेल में डाल दिया गया। [1.]

इस बीच देश में मई 1857 ई.को देश में अंग्रेजों के विरूद्ध स्वतंत्रता का महासंग्राम प्रारंभ हुआ। तब रायपुर स्थित सेना, जनता के सहयोग से स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित हो गई। [2.]

---

1. संदर्भ छत्तीसगढ़ :
2. वीर सावरकर : द इंडियन वार आफ द इंडिपेन्डेस.

पृष्ठ - 37

अगस्त 1857 में तीसरी देशी पैदल सेना के सहयोग से नारायण सिंह जेल से भागने में सफल हुये और सोनाखान पहुंचे। नारायण सिंह ने संघर्ष के लिये 500 सैनिकों की एक फौज इकट्ठा की और सोनाखान के निकट एक पहाड़ी को अपना केन्द्र बनाया। नारायण सिंह को पुनः गिरफ्तार करने के लिये लेफ्टिनेट स्मिथ नवम्बर 1857 ई. को सोनखान रवाना हुये। प्रारंभ में स्मिथ को पराजित होना पड़ा किन्तु अतिरिक्त सेना आ जाने से तथा भटगांव, बिलाईगढ़ व देवरी के जमींदारों से मदद मिलने के कारण वह नारायण सिंह को पराजित करने में सफल हुये। तात्कालिक डिप्टी कमिश्नर इलियट ने राजद्रोह का आरोप लगाकर नारायण सिंह को 9 दिसम्बर 1857 को फांसी की सजा सुना दी "इस प्रकार नारायण सिंह छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद हुये।" [1].

रायपुर में संघर्ष :-

रायपुर गजेटियर से जानकारी मिलती है कि 15 अक्टूबर 1857 को गुरूर सिंह, रणमन्त सिंह तथा संबलपुर के कुछ जमीदारों के साथ तात्कालीन रायपुर जिले के उत्तर में सोहागपुर क्षेत्र में प्रवेश किया। रायपुर के डिप्टी कमिश्नर ने स्थानीय सैनिकों के साथ तात्कालीन रायपुर जिले के उत्तर में सोहागपुर क्षेत्र में प्रवेश किया। रायपुर के डिप्टी कमिश्नर ने स्थानीय सैनिकों के साथ सोहागपुर के पास आक्रमण किया, इस संघर्ष में ब्रिटिश सेना के कुछ घुड़सवार मारे गये। अंत में 17 विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया गया किन्तु वे कैद से भाग गये। इस संघर्ष में विद्रोहियों के वास्तविक नेता थे "सतारा के राजा के भूतपूर्व वकील रंगा बापू" [2].

---

1. जे. पी. शर्मा : मध्यप्रदेश का राष्ट्रीय आंदोलन पृष्ठ – 25.

2. रायपुर गजेटियर :

संबलपुर के सुरेन्द्र साय का विद्रोह :-

सन् 1827 में संबलपुर के राजा चौहान राजा महराजसाय की मृत्यु बिना उत्तराधिकारी के हो गई। चौहान वंश की परंपरा के अनुसार संबलपुर की राजगद्दी पर उनकी रायपुर खिंडा शाखा के सुरेन्द्र साय का अधिकार को अस्वीकार करते हुऐ पहले महाराजा साय की विधवा रानी मोहनकुमारी को गद्दी पर बैठा दिया किन्तु जन असंतोष को देखते हुए बरपाली के चौहान जमींदार परिवार के अपने पिट्ठू राजकुमार नारायण सिंह को अवैध रूप से सम्बलपुर की गद्दी पर बैठा दिया। राजपुर खिड़ा के चौहान परिवार ने इसका विरोध किया। सुरेन्द्र साय के छः भाईयों, उनके चाचा बलराम सिंह तथा अनेक जमींदारों ने विद्रोह प्रारंभ किया। इसी बीच सुरेन्द्र साय के समर्थक लखनपुर जमींदारी के बलभद्र देव की नारायण सिंह के एक सिपाही ने हत्या कर दी। इसका बदला लेने के लिए सुरेन्द्र साय ने रामपुर के किले पर आक्रमण कर दिया तथा यहां के जमींदारी दुर्जन सिंह की जो संबलपुर के राजा का वफादार था, हत्या कर दी। इस अपराध में सुरेन्द्रसाय, उसके भाई उदन्तसाय और चाचा बलराम सिंह को आजीवन कारावास की सजा देकर हजारी बाग जेल में भेज दिया गया।[1]

इसी बीच अंग्रेज के अत्याचार से असंतुष्ट जमींदारों एवं प्रजा ने सुरेन्द्र साय के नेतृत्व में संघर्ष करने का निश्चय किया। अंततः 31 अक्टूबर 1857 को सुरेन्द्र साय जेल से भागने में सफल हुये। सुरेन्द्र साय और उसके परिवार वालों ने लगातार अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष किया। [2]

संबलपुर का जो उस समय छत्तीसगढ़ का हिस्सा था। आज भी सुरेन्द्रसाय के किस्सों कथाओं से गुंजित है। सुरेन्द्र साय को आखिर में 23 जनवरी 1864 को उसके भाईयों तथा साथियों सहित गिरफ्तार कर लिय गया। छत्तीसगढ़ के कमिश्नर ने उन्हें आजन्म कारावस दिया। इस निर्णय को तात्कलीन जुडिशियल कमिश्नर

---

1. डी.पी.मिश्र : हिस्ट्री आफ फ्रीडम मूव्हमेंट इन एम.पी. पेज 96

2. संदर्भ छत्तीसगढ़ : पृष्ठ 24

कम्बोल ने यह कहकर निरस्त कर दिया कि सुरेन्द्र साय के विरूद्ध आरोप सिद्ध नहीं होते फिर भी ब्रिटिश अधिकारियों ने 1818 के तीसरे रेगुलेशन के तहत इन्हें कैद कर लिया, और असीरगढ़ भेज दिया। जहां 28 फरवरी 1884 के लगभग 90 वर्ष की आयु में सुरेन्द्र साय की मृत्यु हो गई। इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का एक सितारा डूब गया। 1.

रायपुर में सैन्य विद्रोह :-

नारायण सिंह को फांसी देने की घटना से छत्तीसगढ़ में असंतोष व्याप्त हो गया था। रायपुर में स्थित तीसरी नेटिव सेना स्वतंत्रता के महायज्ञ से अछूती नहीं रह सकी। 18 जनवरी 1858 की रात्रि के 8 बजे मैंगनीज लश्कर हनुमान सिंह ने अपने दो साथियों के साथ सार्जेंट सिडवेल पर तलवार से आक्रमण किया। जिसकी बाद में मृत्यु हो गई। इसके बाद वे इस विद्रोह में सम्मिलित होने का आह्वान करते हुए अपनी सेना में आ गये। संगठन तथा योजना के आभाव के कारण छः घंटे में यह विद्रोह दबा दिया गया। लश्कर हनुमान सिंह फरार हो गये तथ अंग्रेज उसे कभी भी गिरफ्तार न कर सके। 2.

किन्तु तीसरी सेना के 17 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया और रायपुर के डिप्टी कमिश्नर इलियट के आदेश पर सेना और नागरिक के समक्ष इन सभी को फांसी पर लटका दिया गया। इस विद्रोह में प्राणों की आहूती देने वाले सेनानी थे:

---

1. जे.पी.शर्मा : मध्यप्रदेश का राष्ट्रीय आंदोलन 1920-1947 पृष्ट 122
2. डी.पी. मिश्रा : मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास.
   पृष्ठ - 119.

गाजी खॉं, अब्दुल दय, मुल्लू, शिवनारायण, पन्ना लाल, मातादीन, ठाकुर सिंह, अकबर हुसैन, बल्ल दुबे, लल्लासिंह, बुद्धू, परमानंद, शोभाराम, दूर्ग प्रसाद, नजुर मुहम्मद, शिव गोविन्द एवं देवीदीन। [1]

उदयपुर का विद्रोह :-

सरगुजा राज परिवार की एक शाखा उदयपुर में राज्य कर रही थी। यहां 1818 में ब्रिटिश संरक्षण काल में कल्याण सिंह राजा थे। 1852 में यहां के राजा और उनके भाईयों पर मानव हत्या का आरोप लगाकर अंग्रेजों ने कैद कर लिया, तथा रियासत को अपने अधिकार में ले लिया। सन् 1857 के विद्रोह के समय उदयपुर के राजा अपने दोनों भाईयों के साथ उदयपुर पहुंचे। 1858 में इन्होंने सैनिक संगठन के साथ विद्रोह किया और कुछ समय के लिये अपना राज्य स्थापित कर लिया, किन्तु सरगुजा राजा की सहायता से इनके राजकुमार भाईयों को 1859 में गिरफ्तार कर आजन्म काले पानी का दण्ड देकर अण्डमान भेज दिया गया। उदयपुर की रियासत सरगुजा महाराज के भाई बिन्देश्वरी प्रसाद सिंह देव को विद्रोह दबाने के योगदान देने के उपलक्ष्य में 1960 में अंग्रेजों ने दे दी।

इस प्रकार छत्तीसगढ़ क्षेत्र में स्वतंत्रता के इस प्रथम महासमर को दबाने में अंग्रेज सफल हुये। इस महासमर में कई राजाओं, जमीदारों, सैनिकों तथा नागरिकों ने भाग लिया किन्तु अन्य राजाओं और जमीदारों की मदद से इसे दबा दिया गया। संभवतः ये लोग ही भारत की गुलामों के कारण बने परन्तु नागरिकों में राष्ट्रीय जागरण पूर्णतः विस्तृत हो चला था। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जागरण का काल प्रारंभ हो चुका था।[2]

---

1. संदर्भ छत्तीसगढ़ : पृष्ठ 28.

2. *Abid.*

छत्तीसगढ़ की रियासतों में असंतोष :-

तात्कालिक छत्तीसगढ़ में 14 रिसायतें थी। ये सभी रियासतें प्रारंभ में ब्रिटिश शासन के प्रत्यक्ष अकुंश से मुक्त थी। किन्तु इस नियम के बन जाने से किसी राजा की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी राजा राजपद की स्वीकृति ब्रिटिश शासन के द्वारा प्राप्त करता है सामान्यत कुछ स्थितियों में ब्रिटिश शासन राज्य के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर सकता था। ऐसे कुछ रियासतें जिस पर ब्रिटिश शासकों का हस्तक्षेप था वे निम्न थे। 1.

रायगढ़ रियासत 1862 में राजा देवाथ के पुत्र घनश्याम सिंह इस रियासत के उत्तराधिकारी बनाये गये परन्तु शासन व्यवस्था में अनियमितता का आरोप लगाकर ब्रिटिश शासक ने एक अधीक्षक की नियुक्ति की जो भूपदेव सिंह के राजा बनने तक (1894) तक चलता रहा।

सारंगढ के राजा संग्राम सिंह सन् 1830 से 1872 तक नि: शंक शासन करते हुये ब्रिटिश शासन से सम्मानित होते रहे, परन्तु 1872 में उनकी मृत्यु हो गई तब नाबालिक प्रताप सिंह रियासत के उत्तराधिकारी हुये शीघ्र ही शासन में दक्षता का आभव दिखलाकर ब्रिटिश अधिकारियों ने हस्तक्षेप की नीति अपनाते हुये शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। 2.

सक्ति रियासत की स्थिति भिन्न थी। यहां के राजा रणजीत सिंह के अत्याचार से जनता खिन्न थी और इसे ही महत्वपूर्ण कारण मानकर ब्रिटिश शासन ने तत्कालिन राजा के अपदस्त कर दिया और सन् 1857 से 1892 तक शासन कार्य ब्रिटिश शासन के ही माध्यम से चलने लगा। इसी प्रकार छुई खदान की भी स्थिति थी यहां भी ब्रिटिश सरकार ने एक दीवान की नियुक्ति की थी।

बस्तर की रियसत के जनता की राजा से अत्यचार से परेशान थे। खैरागढ़ में भी अधीक्षक की नियुक्ति 1873 से ही की गई जो सन् 1883 तक चलता रहा। इस प्रकार स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ की देशी रियासतें शासन द्वारा शासित थी।

---

1. डॉ0 जे.पी.शर्मा : मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आंदोलन, पृष्ट – 224.

2. Abid.
3. B Commercial and Janaral dictor of C.P. & Bear. 1938 Page 97.